आप अनावश्यक रूप से सोचते हैं कि समाज में उच्च स्तर पर व्यक्ति समाज में निचले स्तर के व्यक्तियों की तुलना में अधिक खुश हैं। इसका कारण यह है कि, खुशी सोच पर निर्भर करती है और हर वर्ग के व्यक्तियों की सोच की रेखा समान होती है। उनके लिए उपलब्ध वस्तुओं से वे समान मात्रा में सुख प्राप्त करते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

आइए हम इसे और विस्तृत करें। एक वकील हर महीने पैसे बचाता है और आखिरकार एक कार खरीदता है। वकील के पास एक नौकर है। नौकर भी हर महीने पैसे बचाता है और आखिरकार साइकिल खरीदता है। वकील अपनी कार को लेकर बहुत खुश है। नौकर अपनी साइकिल को लेकर बहुत खुश है। वकील अपने नयी कार को दिखाने के लिए अपने दोस्तों के घर अनावश्यक रूप से घूमता रहता है। नौकर वही करता है। वो भी अपने दोस्तों के घर अनावश्यक रूप से घूमता रहता है ताकि उन्हें अपनी नयी साइकिल दिखायी जा सके। कुछ महीनों के बाद, वकील एक लंबी थका देने वाली सफर करता है और घर जाने के बाद शिकायत करता है, "दिनभर कार चलाने से बहुत थकान होती है।" उसके नौकर को भी शहर में कई जगहों पर जाना पड़ता है और इसलिए वह साइकिल की सवारी बहुत करता है और घर जाने के बाद शिकायत करता है, "दिनभर साइकिल चलाने से बहुत थकान होती है।" यदि आप नौकर को बताते हैं कि आपका मालिक उतना ही दुःखी है जितने कि तुम, तो नौकर प्रतिक्रिया देगा, "आपको किसी के दुःख पर चुटकुले नहीं बजाने चाहिए। उनके पास कार है। समाज में उनकी प्रतिष्ठा है। वे भी उतना ही दुःखी हो सकते है जितना कि मैं?"

हालाँकि समाज में वकील और नौकर के बाहरी परिस्थिति में काफी अंतर हैं, लेकिन उनकी आंतरिक भावनाएँ बिल्कुल एक जैसी हैं। इसलिए, आपको भ्रम से बाहर निकलना होगा, जैसे "अधिक धन, अधिक प्रसन्नता। उच्च स्थिति, अधिक प्रसन्नता। अधिक प्रसिद्धि, अधिक प्रसन्नता।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

सच तो यह है कि, गाय को हरी खाने से प्राप्त होने वाला आनंद उस आनंद के बिल्कुल बराबर है जो एक अमीर व्यक्ति को छप्पन भोग खाने से मिलता है।

इससे पहले कि आप किसी भी भौतिक वस्तु को प्राप्त करें, उस योजना को बनाने और तदनुसार कार्य करने में परेशानी है। जब आप उसे प्राप्त करते हैं, तो उसे संरक्षित और सुरक्षित करने में परेशानी है। यदि आप उसे खो देते हैं, तो परेशान ही परेशान रहते हैं।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

पहाड बडा होता है। उससे बडा समुद्र। समुद्र से बडा आकाश। सब से बडा भगवान है लेकिन मायिक इच्छाएं भगवान से भी बडी हैं। वे आपको कभी भी ईश्वर के पास नहीं जाने देंगी।